Dr Suman Rajan
Dr Neha
Dr. Manjeet
Dr. Sonia

19/02/2020

207
19/02/2020

26-2-2020

From

Director General Higher Education,
Haryana, Panchkula.

To

1. The Vice- Chancellors of all State and Private Universities,
2. The Principals of all Government Colleges,
3. The Principals of all Government Aided Colleges,
4. The Principals of all Self Financing Colleges.

Memo No. 27/52- 2019 Co (1)　　　　　　　　Dated 18th February, 2020.

Subject: Regarding Student Literature Festival in Colleges.

In recent years, it has been observed that most students are less keen on developing their reading habits. Still, to be able to stand on the same ground as other leading countries, this habit should be instilled in the students. Many stakeholders and teachers are concerned with the students declining reading habits. However, parents are unaware of this problem or choose to leave this problem for teachers to handle. It will not be out of queue to mention that books play an important role in shaping the lives of youth. Their career, their personality, their creativity and even their thinking enhances when different prospects are presented in front of them from motley of categories of art, culture and science. Unfortunately, it is observed that the students lack the interest in literature, books and even colleges lack in motivating students to develop reading and literature culture among students. The problem most students have that contributes to their poor performance in tests and examinations is lack of proper reading habits.

For an excellent performance, there is the need for the student to form good reading and study habits. At present, due to the influence of the social media, students do not show much interest in reading books; magazines and journals, among others. Even the examination malpractices may be traceable to the prevalent poor reading interests and habits among the wide spectrum of students. In addition, the by-products of scientific and technological inventions and innovations have also contributed greatly to the dwindling fortunes of the good practice of reading among majority of the students. Today, many students prefer to watch movies and other shows on the television, listening to audio-CDs, watching video-CDs, among others. Many parents and teachers complain about students of our generation who have not developed reading habits among themselves.

To address the issue, it is felt to develop reading habit in young generation which include; improving communication, better ability to comprehend, improve knowledge and perspective, builds personality and somewhat pacify the mind. Department has already taken various

initiatives in this direction which includes launch of foundation booklet- RISE and constitu[tion of] literary societies in colleges. It has been decided that to facilitate and inculcate the knack o[f] reading books apart from academic books, literary fest may be held in some of the lead colleges so that students of Haryana can learn the different realms of life through books.

The Literature Festival will be an annual feature and will be organized in one of the lead colleges at district level. It will be different from the Lit Festivals that are happening in plethora nowadays as here the audience and participants will be our students who have an innate talent of expressing themselves through creative writing be it poetry or short story. For this year, it has been decided to organize Literature Festival at S. D. College, Panipat on 17th -18th March, 2020. There will be a book fair simultaneous to this book fair which will continue from 17th March till 22nd March. To make this event student centric, it has been decided that 2 entries each in story writing and poetry writing will be invited from all colleges and universities out of which our jury will shortlist 200 stories and 200 poems. These students along with their in-charges will be called for the literature fest for literary workshops and for interaction with the eminent authors. This event will be called Akhil Haryana Yuva Sahitya Mahotsav as students from all colleges and universities will be participating in it.

You are requested to send 2 entries each in story writing and poetry writing from your institution by 26th February, 2020 at yuvaliteraturefestival@gmail.com. Your support will make this event great success and it will have a far reaching impact on our students.

Deputy Director Coord,
For Director General Higher Education,
Haryana, Panchkula.

A copy of the above is forwarded to Principal, S.D College, Panipat with a request for making all necessary arrangements.

Deputy Director Coord,
For Director General Higher Education,
Haryana, Panchkula.

Scanned by CamScanner

ओ३म्

दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

DAYANAND MAHILA MAHAVIDYALAYA, KURUKSHETRA

(Estd. 1982)

Off. : 01744-270981, 251981
Website : dmmkkr.com
E-mail : dmmkkr2010@rediffmail.com

Ref. No. (क्रमांक) DMM/20/194

Date (दिनांक) 25.02.2020

To

The Principal,
S.D. College,
Panipat.

Sub: Regarding Student Literature Festival in Colleges.

Sir,

This is reference to office memo no. 27/52-2019 Co (1) dated 18.02.2020 received from O/o Director General Higher Education, Haryana, Panchkula on the subject cited above. In this regard please find enclosed the following entries of Poetry and Stories from our college for the Literature Festival.

S. No.	Name of Student	Class	Roll No.	Topic
1.	Meenakshi	B.A. III	1531420029	मेरे प्यारे वतन (कविता)
2.	Komal	B.A. III	1531420031	बेटी (कविता)
3.	Baljinder Kaur	B.A. III	1531420074	मुस्कुराहट (कहानी)
4.	Dipali	B.A. III	1614520026	बूंद–बूंद से भरता सागर (कहानी)

With kind regards,

Yours faithfully,

मनजीत कौर

Principal
Principal
Dayanand Mahila Mahavidyalaya
Kurukshetra (Haryana)

Copy to: Deputy Director Coord for Director General Higher Education, Haryana, Panchkula w.r.t. office memo no. 27/52-2019 Co (1) dated 18.02.2020.

मेरे प्यारे वतन

मेरे प्यारे वतन, मेरे प्यारे वतन
तुझको हृदय से नमन, हृदय से नमन

हम हैं, भाग्यशाली, जो यहाँ जन्म लिया
तूने आंचल में अपने आश्रय दिया
और हमको दिये हँसते गुलशन
तुझको हृदय से नमन, हृदय से नमन

है खुशबू निराली तेरी हवाओं में
मस्ती है अजब इन फिजाओं में
चारों और फैला अमन ही अमन
तुझको हृदय से नमन, हृदय से नमन

हैं लोग कितने यहाँ भले और निराले
हिम्मत भरे हैं और हैं दिलवाले
इसे देख भूले सब अपनी थकान
तुझको हृदय से नमन, हृदय से नमन

इतिहास को भी तुझ पर अभिमान है
तू ही दिल है हमारा, तू ही जान है
प्रगति के पथ पे तू करता रहे गमन
तुझको हृदय से नमन, हृदय से नमन

मेरे प्यारे वतन, मेरे प्यारे वतन
तुझको हृदय से नमन, हृदय से नमन

Principal
Dayanand Mahila Mahavidyalaya
Kurukshetra (Haryana)

(बेटी)

घर - आंगन की शान है बेटी
माँ - बाप का अभिमान है बेटी

घर को खुशियों से भर देती
हर दुख को हर लेती है

आंखों में सजाती है सपने
सपनों में भी होते अपने

एक नई उम्मीद जगाती बेटी
गम को दूर भगाती बेटी

टुकड़ा है वो माँ के मन का
तारा है सुन्दर नील गगन का

पापा की परी है बेटी प्यारी
खिली हुई मानो फुलवारी

परिवार का सम्मान है बेटी
सबके प्राणों का तार है बेटी
बेटी वाले घर भाग्यशाली हैं
बेटी फुलवारी - सी हम माली है

बेटी का सब सम्मान करो
बेटी पर अभिमान करो।

Principal
Dayanand Mahila Mahavidyalaya
Kurukshetra (Haryana)

नाम - कोमल
कक्षा - बी॰ए॰ तृतीय
अनुक्रमांक - 1531420
ये मेरी स्वंय रचित कविता है

नी — "बूँद-बूँद से सागर भरता"

एक गाँव में सूखा पड़ने की वजह से गाँव के सभी लोग परेशान थे। उनकी फसलें खराब हो रही थी; बच्चे भूखे मर रहे थे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि इस समस्या का समाधान कैसे निकाला जाए। उसी गाँव में एक विद्वान महात्मा रहते थे। गाँव वालों ने निर्णय किया कि - उनके पास जाकर इस समस्या का समाधान मांगेंगे। सब लोग महात्मा के पास गए और उन्हें अपनी सारी कहानी विस्तार से बताई। महात्मा ने कहा कि आप सब मुझे एक सप्ताह का समय दीजिए और मैं आपको कुछ समाधान ढूँढ कर बताता हूँ।

गाँव वालों ने कहा ठीक है और महात्मा के पास से चले गए। एक सप्ताह बीत गया लेकिन साधु महात्मा कोई भी हल ढूँढ न सके और उन्होंने गाँव वालों से कहा कि अब तो आप सब की मदद केवल ऊपर बैठा वो भगवान ही कर सकता है। सब भगवान की पूजा करने लगे। भगवान ने उन सब की सुन ली और उन्होंने गाँव में अपना एक दूत भेजा।

गाँव में पहुँच कर दूत ने सभी गाँव वालों से कहा कि "आज रात को अगर तुम सब एक - एक लोटा दूध गाँव के पास वाले उस कुएँ में बिना देखे डालोगे तो कल से तुम्हारे गाँव में घनघोर बारिश होगी और तुम्हारी सारी परेशानी दूर हो जाएगी।" इतना कहकर वो दूत वहाँ से चला गया। गाँव वाले बहुत खुश हुए और सब लोग उस कुएँ में दूध डालने के लिए तैयार हो गए। लेकिन उसी गाँव में एक कँजूस इंसान रहता था। उसने सोचा कि सब लोग तो दूध डालेंगे ही

अगर मैं दूध की जगह एक लौटा पानी डाल देता हूँ
किसको पता चलने वाला है। रात को कुएँ दूध डालने के
बाद सारे गाँव वाले सुबह उठकर बारिश होने का इंतजार करने
लगे। लेकिन मौसम वैसे का वैसा ही दिख रहा था और
बारिश के होने की थोड़ी भी संभावना नहीं दिख रही थी।
देर तक बारिश का इंतजार करने के बाद सब लोग उस
कुए के पास गए और कुएँ में देखा तो कुआँ पानी
से भरा हुआ था और उस कुएँ में दूध की एक बूँद भी
नहीं थी। सब लोग एक दूसरे की तरफ देखने लगे और
समझ गए कि बारिश अभी तक क्यों नहीं आई।

और वो इसलिए क्योंकि उस कंजूस व्यक्ति की तरह
सारे गाँव वालों ने यही सोचा था कि सब लोग तो दूध
डालेंगे ही, मेरे एक लौटा पानी डाल देने से क्या फर्क
पड़ने वाला है और इसी चक्कर में किसी ने भी कुएँ में
दूध की एक बूँद भी नहीं डाली और कुएँ को पानी से
भर दिया।

शिक्षा :- एक जैसी गलती आज कल हम अपने वास्तविक
जीवन में भी करते रहते हैं हम सब सोचते हैं
कि हमारे एक के कुछ करने से क्या होने वाला है।
लेकिन हम ये भूल जाते हैं कि "बूंद बूंद से सागर भरता है।"
लेकिन आप अपने देश, समाज, घर में कुछ बदलाव लाना
चाहते हैं, कुछ बेहतर करना चाहते हैं तो खुद को
बदलिये और बेहतर बनाइये बाकी सब अपने आप हो
जाएगा।

Dipali D/o Sh. Vinod Kumar
B.A Final Yr. (Voc.)
Roll No - 1614520026

यह मेरी स्वयं रचित
कहानी है।

Principal

कहानी

मुस्कुराहट

एक आदमी बर्फ बनाने वाली कम्पनी में काम करता था। एक दिन वह कारखाना बंद होने से पहले अकेला ही फ्रीजर वाले कमरे का चक्कर लगाने गया तो गलती से दरवाजा बंद हो गया और वह अंदर बर्फ वाले हिस्से में फंस गया। छुट्टी का समय हो गया था और सभी अपने-अपने घर जा रहे थे। किसी का भी ध्यान उस कमरे की तरफ नहीं गया कि कोई अंदर फंस गया है। वह समझ गया कि २-3 घंटे के बाद उसका शरीर बर्फ बन जाएगा। जब उसे मृत्यु सामने नजर आने लगी तो वह परमात्मा को याद करने लगा - "प्रभु मुझे इस मुश्किल से बाहर निकाल दे, मैं सारी उम्र तुम्हारा उपकार याद करूंगा।" इतना कहते-कहते उसकी आँखों में आंसू आ गए। एक घंटा बीत चुका था अचानक फ्रीजर वाले कमरे में खट-खट की आवाज हुई। दरवाजा खोला गया, चौकीदार भागता हुआ आया और फँसे हुए आदमी को उठाकर बाहर निकाला और गर्म हीटर के पास लेकर गया। अब उसकी हालत में कुछ सुधार हुआ तो उसने चौकीदार से पूछा "कि आप अंदर कैसे आए?" आगे से चौकीदार ने उत्तर दिया कि साहब मैं इस कारखाने में पिछले २० सालों से काम कर रहा हूँ। काम करने के लिए सैंकड़ो ही मजदूर कारखाने में आते-जाते रहते हैं और बहुत से अफसर भी। पर आप उन लोगों में से हो जो आते जाते मुझसे हंसकर मिलते हो। आपका इस ढंग से मिलना मेरी सारे दिन की थकावट को दूर कर देता है। जबकि अफसर लोग मेरे पास से ऐसे निकल जाते हैं कि मैं इस जगह का हूँ ही नहीं। आज मैंने आपको अंदर जाते हुए देखा था पर जब आपको ज्यादा देर हो गई तो मैं आपको ढूंढने

के लिए चल पड़ा कि कहीं आप किसी मुसीबत में हो नहीं फंस गए।

मृत्यु के मुँह से बचा वह आदमी यह सुनकर इतना हैरान हो गया कि किसी से हँस कर मिलने का सार इतना अच्छा हो सकता है।

बलजिन्द्र कौर
बी. ए. III
रोल नं. → 1531420074

यह मेरी स्वयंरचित रचना है।

Principal
Dayanand Mahila Mahavidyalaya
Kurukshetra (Haryana)